संपादकीय

'जन विकल्प', विकल्प त्रिशूर की मुखपत्रिका है। 'विकल्प त्रिशूर' हिन्दी प्रेमियों-पाठकों का एक मंच है, जहाँ हर दूसरे महीने में नई-नई पुस्तकों को लेकर चर्चायें चल रही हैं। गत पाँच साल से यह कार्य बिना रुकावट के चल रहा है, यह खुशी की बात है, खासकर हिंदीतर प्रदेश होने के नाते। ये पुस्तकें सिर्फ नई होने के कारण नहीं चुनी जाती हैं बल्कि उनसे जो विचार संप्रेषित हो रहे हैं वही अहम बात है। 'कलिकथा वाया बाइपास', 'परछाई नाच', 'सूत्रधार', 'निन्यानवे', 'हलफनामे', 'ग्लोबल गाँव के देवता' जैसे उपन्यास, 'सिद्धार्थ का लौटना', 'पाल गोमरा का स्कूटर', 'मुक्ति', 'उपकथा का अन्त', 'आइने सपने और वसंतसेना' जैसे कहानी संग्रह, 'धरती की पुकार', 'विकल्पहीन नहीं है दुनिया' जैसे निबन्ध संग्रह, 'प्रार्थना के शिल्प में नहीं', 'क्रूरता', 'दुष्चक्र में स्रष्टा', 'नगाडे की तरह बजते शब्द', 'कहते हैं तब शहंशाह सो रहे थे', 'पुतली में संसार', 'स्त्री मेरे भीतर' जैसे काव्य संग्रहों, 'नेपथ्य राग', 'अलख आज़ादी की', 'चरणदास चोर' जैसे नाटकों के चुनाव एवं चर्चा यही प्रमाणित करते हैं। इस तरह कुल तैंतीस पुस्तकों पर अभी तक चर्चायें हुई हैं।

विश्व में अब भी विकल्प है, यही हमारे पाठक मंच का विश्वास है, पर उसके लिए कर्मरत होना अनिवार्य है। लोभ एवं लालच के निरंकुश जाल में फंसे लोग ही विकल्पहीनता की बात करते हैं। असल में वे असामाजिकता के वक्ता हैं। हम प्रतिगामी, लोभी, निरंकुश शक्तियों से घिरे हुये हैं। वे सबको ललचाकर एक लालची दुनिया का निर्माण कर रही हैं, जहाँ मनुष्य नहीं होते, वस्तु में बदले प्राणी मात्र होते हैं। वहाँ प्रतिक्रिया व्यक्त करना, नारा लगाना, एकजुट होना आदि सभ्य कार्य नहीं है। ऐसी दुनिया से मनुष्य और उसकी गरिमा को वापस लेने के प्रयत्न से सहमना होना है। उसके लिए शिक्षा व्यवस्था एवं पाठ्यक्रम पर वार करना होगा, उसे सुधारना होगा जिससे आगामी पीढ़ी को सही रास्ते पर ला सकें। मोंटीसोरी शिक्षा व्यवस्था में बच्चे मनुष्य एवं दुनिया देखने की दृष्टि से वंचित होते हैं। यह वर्ग अपने चारों ओर देख नहीं सकता है, समाज से अन्य हो जाता है, बाज़ारी दुनिया का अभिन्न अंग हो जाता है। बाजारी दुनिया के स्वामी एवं वक्ता ही विकल्पहीनता की बातें करते हैं, आम जनता को भ्रम में डालते हैं। इसका विरोध एवं प्रतिरोध करने के लिए अग्रसर होना ही है। हमें विश्वास है कि हमारा यह कदम भी उक्त कार्य का हिस्सा होगा।

अब छमाही तौर पर 'जन विकल्प' पत्रिका निकालने की सोच में हैं। 'वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और साहित्य' पर प्रवेशांक को केन्द्रित रखा है। यह अचानक लिया गया निर्णय नहीं, सोच-समझकर लिया गया निर्णय है। आगे भी सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर पत्रिका को केन्द्रित रखने का इरादा है। सभी मान्य पाठकों एवं लेखकों की सहायता एवं सहयोग प्रार्थित है।

(पी. रवि)
संपादक

अनुक्रम

		पृ.सं.
संपादकीय		
'वस्तु हमारे लिए है' का प्रेग्मेटिज़्म	राजेश्वर सक्सेना	5
वैश्वीकृत परिदृश्य में साहित्य	ए. अरविन्दाक्षन	17
वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और कविता	शिवकुमार मिश्र	22
हर समय के समानांतर चलता है कोई और समय	विजयकुमार	30
वैश्वीकरण और समकालीन हिन्दी कविता	प्रमोद कोवप्रत	40
बाज़ारवाद और समकालीन हिन्दी कविता	श्रुतिमोल के.एस.	46
स्त्री प्रतिरोध का वर्तमान	के. राजेश्वरी	55
आमों का मौसम	पी.पी. रामचन्द्रन	65
तीसरा डग	शिवदास पुरमेरी	69
उपनिवेश और उपन्यास	विनोद तिवारी	70
वैश्वीकरण की कथा और कथा का वैश्वीकरण	रेखा कुमारी	86
वैश्वीकरण के सन्दर्भ में नए उपन्यास	सिन्धु ए.	94
नाच	हरे प्रकाश उपाध्याय	98
स्कूल	हरे प्रकाश उपाध्याय	101
भूमंडलीकृत समय का यथार्थ चित्रित कहानियाँ	मनीषा झा	104
इधर गरजती सिन्धु लहरियाँ कुटिल कालों के जालों से	शान्ती नायर	110
अदृश्य जंजीरें और गिरफ्त होते लोग	सौम्या एस.	126